

जल-गन्धादिक द्रव्य से, पूजूँ श्री जिनराज ।
पूर्ण अर्घ्य अर्पित करूँ, पाऊँ चेतनराज ॥
ॐ ह्रीं श्री पीठस्थितजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
(दोहा)

जिन संस्पर्शित नीर यह, गन्धोदक गुण खान ।
मस्तक पर धारूँ सदा, बनूँ स्वयं भगवान ॥
(मस्तक पर गन्धोदक चढ़ायें । अन्य किसी अंग से गन्धोदक का स्पर्श वर्जित है ।)

विनय पाठ

(डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल कृत)

(दोहा)

अरहंतों को नमन कर नमूँ सिद्ध भगवान ।
आचारज उवझाय अर सर्व साधु गुणखान ॥ १ ॥
मोक्ष मोक्ष के मार्ग में विद्यमान जो जीव ।
यथायोग्य नम कर प्रभो वन्दन करूँ सदीव ॥ २ ॥
चौबीसों जिनराज की दिव्यध्वनि अनुसार ।
ज्ञानिजनों ने जो लिखी वाणी विविधप्रकार ॥ ३ ॥
नय-प्रमाण से विविधविध कही तत्त्व की बात ।
भविकजनों के लिये जो एकमात्र आधार ॥ ४ ॥
सब द्रव्यों के सभी गुण अर सामान्य-विशेष ।
आज सभी को सहज ही हैं उपलब्ध अशेष ॥ ५ ॥
जिनवाणी उपलब्ध है उसे बतावनहार ।
बहुत अधिक दुर्लभ नहीं उसके जाननहार ॥ ६ ॥
मोहनींद में जो पड़े नहीं कोई आधार ।
साधर्मीजन कम नहीं उन्हें जगावनहार ॥ ७ ॥
सारा जग बेचेत है मोहनींद के द्वार ।
किन्तु हमें उपलब्ध हैं मार्ग बतावनहार ॥ ८ ॥

महाभाग्य से प्राप्त हो देव-गुरु संयोग।
 पर जिनवाणी मात की शरण सहज संयोग॥ ९ ॥
 उसके अध्ययन मनन से चिन्तन से निजतत्त्व।
 जाना जाता सहज ही होता है सम्यक्त्व॥ १० ॥
 जिनवाणी के मर्म को अरे जानने योग्य।
 ज्ञान प्रगट पर्याय में होवे सहज संयोग^१॥ ११ ॥
 और कषायें मन्द हों भाव रहें निष्काम।
 एक आतमा में लगे छोड़ हजारों काम^२॥ १२ ॥
 देव-गुरु संयोग या जिनवाणी के योग।
 तत्त्व श्रवण में मन लगे और न मन में रोग^३॥ १३ ॥
 अरे क्षयोपशम विशुद्धि और देशना लब्धि।
 जिसके ये तीनों बने उसे तत्त्व उपलब्धि॥ १४ ॥
 आतम में अति अधिक रुचि जब होवे सर्वांग।
 विशेष तरह की योग्यता वह लब्धि प्रायोग्य॥ १५ ॥
 आतम का उपयोग जब आतम में रमजाय।
 करणलब्धि है आतमा आतम माँहि समाय॥ १६ ॥
 करणलब्धि के अन्त में आतम अनुभव होय।
 सम्यग्दर्शन प्राप्त हो मन रोमांचित होय॥ १७ ॥
 तीर्थंकर चौबीस ही हमें जगावनहार।
 जागें आतम में लगें हो जावें भव पार॥ १८ ॥
 देव-शास्त्र-गुरु की कृपा से कटता संसार।
 नमन करूँ इन सभी को भगवन् बारंबार॥ १९ ॥
 अरे हमारा आतमा आतम में रम जाय।
 अन्य न कोई चाह मन आतम माहि समाय॥ २० ॥